



साधकों का
मासिक प्रेरणा

बुद्धवर्ष 2553, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, २ दिसंबर, 2009 वर्ष 39 अंक 6

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

न वे कदरिया देवलोकं वजन्ति, बाला हवे नप्पसंसन्ति दानं।

धीरो च दानं अनुमोदमानो, तेनेव सो होति सुखी परत्थ ॥

धम्मपद- १७७, लोकवग्गो

कृपण (लोग) देवलोक में नहीं जाते हैं, मूढ़ (लोग) ही दान की प्रशंसा नहीं करते हैं। पंडित (व्यक्ति) दान का अनुमोदन करता हुआ उसी (कर्म के आधार) से परलोक में सुखी होता है।

शून्यागार और पगोडा

(जयपुर पगोडा के शिलान्यास के अवसर पर मार्च १४, १९८२ का प्रवचन)

जहां शुद्ध धर्म जागता है वहां की धरती तपने लगती है। धर्म की शुद्ध तरंगों से ही धरती तपती है। सारा वातावरण तपता है। यह तपोभूमि न जाने कितने युगों में, कितनी सदियों में धर्म के तप से तपी है। तभी यहां शुद्ध धर्म जागने का, अनेक लोगों के कल्याण का अवसर प्राप्त हुआ है।

जिस धरती पर तापस तपते हैं, जहां सिवाय धर्म-तप के और कोई प्रवृत्ति नहीं होती, वहां चित्त कैसे राग से विमुक्त हो, द्वेष से विमुक्त हो, मोह से विमुक्त हो; इसका सक्रिय अभ्यास ही किया जाता है। इसका भी केवल चित्तन-मनन नहीं, सक्रिय अभ्यास होता है। अंतर्मन की गहराइयों तक कैसे संवर कर लें! नया राग जगने ही न पाये, नया द्वेष जगने ही न पाये, नया मोह जगने ही न पाये। और जो संग्रहीत है वह कैसे शनैः शनैः दूर होता चला जाय। धीरे-धीरे उसकी निर्जरा होती चली जाय, छूटता चला जाय, उसका क्षय होता चला जाय।

जिस धरती पर धर्म का यह शुद्ध अभ्यास निरंतर होता रहता है; वह धरती खूब तपने लगती है। सारा वातावरण तरंगों से आप्लावित हो उठता है, तरंगित हो उठता है। अधिक लोक-कल्याण होने लगता है। ऐसी तपोभूमि में आकर जब कोई व्यक्ति थोड़ा भी प्रयास करता है तो अधिक सफलता प्राप्त होती है।

इस धरती पर अब भी लोग तप रहे हैं। भविष्य में जब यहां शून्यागार बन जायेंगे तो और अधिक लोग तपेंगे। आज भी लोगों का कल्याण होता है, शून्यागार में तपेंगे तब और अधिक कल्याण होगा। साधना के रास्ते, आगे बढ़ने के लिए एक तो अपनी मेहनत आवश्यक है, अपना परिश्रम आवश्यक है। बिना परिश्रम किये कोई उपलब्धि नहीं होती। दूसरे साधना की विधि निर्मल हो, स्वच्छ हो तो लाभ होता है। साधना की विधि निर्मल न हो तो बहुत मेहनत करने पर भी जो लाभ मिलना चाहिए वह नहीं मिलता। उचित मार्गदर्शक हो तो लाभ होता है। क्योंकि साधक गलत तरीके से काम नहीं करता। अच्छे मार्ग निर्देशन में जैसे काम करना चाहिए वैसे काम करता है। एक बात और जो बहुत आवश्यक है, वह है उचित वातावरण हो, उचित स्थान हो। हर कहीं ध्यान करने से वह लाभ नहीं प्राप्त होगा जितना लाभ किसी तपी हुई भूमि पर ध्यान करने से होता है।

अभी पिछले दिनों, साधकों की एक मंडली भारत के वैसे स्थानों पर होकर आयी जहां संत तपे, अरहंत तपे। तभी इतने लंबे अरसे के बाद भी साधक महसूस करता है कि कितनी प्रेरणादायी तरंगें वहां आज भी कायम हैं। तो भूमि का अपना बहुत बड़ा महत्त्व होता है।

सचमुच यह भूमि बहुत मंगलमयी है! तभी शुद्ध धर्म का अभ्यास यहां आरंभ हुआ और आगे जाकर के और अधिक लोग यहां तपेंगे। शून्यागार का अपना महत्त्व है। भगवान ने कहा, जब कोई व्यक्ति अकेला तपता है तो जैसे ब्रह्मा तप रहा हो! जहां दो साथ बैठकर तपते हों तो जैसे दो देवता तप रहे हैं। तीन बैठकर साथ तप रहे हों तो जैसे कोई तपस्वी मनुष्य तप रहे हैं। इससे अधिक एक साथ बैठकर तप रहे हों तो कोलाहल होता है। यानी उन गहराइयों तक तप नहीं होता। सामूहिक साधना का अपना महत्त्व होता है। शून्यागार का अलग महत्त्व है। शून्यागार माने ऐसा स्थान, ऐसा कमरा, ऐसी कुटी जिसमें अपने सिवाय कोई और नहीं। शून्य ही शून्य है। अकेला व्यक्ति एकांत ध्यान कर सके। बहुत आवश्यक है। बड़ा लाभ भी होता है। ब्रह्मदेश में जो ध्यान का केंद्र है, वहां जो शून्यागार हैं उनमें जो तपस्वी तपते हैं, उनकी तरंगें किस प्रकार धर्म से भरपूर हैं। साधक हो तो उसकी महत्ता को समझ सकता है। वहां बैठ करके ध्यान करे तो कितना अंतर। ठीक उसी प्रकार इगतपुरी में शून्यागार बने तो लोग उसमें ध्यान करते हैं तो कितना बड़ा अंतर मालूम होता है। शून्यागार का अपना महत्त्व, बहुत बड़ा महत्त्व है।

सुज्जागारं पविट्टस्स, सन्तचित्तस्स भिक्खुनो।

अमानुसी रति होति, सम्मा धम्मं विपस्सतो ॥

~ धम्मपद- ३७३, भिक्खुवग्गो

“सम्मा धम्मं विपस्सतो” – सम्यक प्रकार से विपश्यना करता है। कहां करता है – “सुज्जागारं पविट्टस्स” – किसी शून्यागार में प्रवेश करके, शुद्ध धर्म की विपश्यना करता हो तो शांतचित्त हो जाता है साधक। और “अमानुसी रति होति” – भीतर ऐसा आनंद, ऐसा रस प्राप्त होता है कि हम मनुष्यों को सामान्यतया अपने ऐन्द्रिय अनुभूति से होने वाले सुखों से उसका कोई मुकाबला नहीं, उसकी कोई तुलना नहीं। उससे बहुत परे है, बहुत परे है। दिव्य अनुभूति होती है, ब्राह्मी अनुभूति होती है और उससे भी परे निर्वाणिक अनुभूति होती है। क्योंकि एकांत साधना कर रहा है। कहीं कोई व्यवधान नहीं है, बाधाये नहीं हैं।

तो बड़े कल्याण की बात होगी। इस तपोभूमि में भी ऐसे शून्यागार निर्मित होंगे। जहां साधक अपनी साधना द्वारा धर्म की गहराइयों तक जा सकेगा। अंतर्तम की गहराइयों तक जो गांठें बांध रखी है उन्हें खोल सकेगा। किसी एक व्यक्ति का भी कल्याण हो जायगा, और कल्याण तो जो-जो तपेगा सबका ही होने वाला है। किसी एक व्यक्ति का भी कल्याण हो जायगा तो इसके निर्माण के लिए जो श्रम, जो त्याग किसी ने भी किया वह सार्थक हो उठेगा। उससे बड़ा मूल्य और कुछ नहीं हो सकता।

एक बार भगवान ने अपने किसी पूर्वजन्म की बात बताते हुए कहा कि जब वह बोधिसत्त्व थे, अभी बुद्ध नहीं बने थे, अनेक जन्मों तक बोधिसत्त्व का जीवन जीते-जीते, अपनी दसों पारमिताओं को पूरा करते-करते ही वह अवस्था आती है जब कोई व्यक्ति बुद्ध बनता है। सम्यक संबुद्ध बनता है। तो दान की भी एक बहुत बड़ी पारमी होती है।

बताते हैं कि वे किसी एक जीवन में बहुत बड़े देश के राजा थे। चित्त में दान की चेतना जागी तो जितना राजकोष था, जितना कुछ उनके पास था सब दान करना शुरू किया। सात वर्ष तक इतना दान दिया, हजारों लोगों को, लाखों लोगों को दान दिया। सात वर्ष तक लगातार दान का क्रम चलता ही रहा। अन्न का दान दिया, वस्त्र का दान दिया, औषधि का दान दिया, वाहन का दान दिया, निवास का दान दिया। लोगों की जो-जो सांसारिक आवश्यकताएं हो सकती हैं वे सारी पूरी हो जायँ। किसी व्यक्ति को किसी सांसारिक बात की कमी न रह जाय। यों सात वर्ष तक खूब दान दिया। अब मुस्कराकर कहते हैं कि इतना बड़ा दान दिया, बहुत पुण्यशाली, पारमी बढ़ाने वाला लेकिन वह सारा का सारा दान एक ओर, और किसी श्रोतापन्न व्यक्ति को एक समय का भोजन दिया जाय, तो एक श्रोतापन्न व्यक्ति को एक समय के भोजन का दिया हुआ दान उससे कहीं अधिक पुण्यशाली होता है। पात्र कैसा है? बीज कहां बोया गया—अपने पुण्यकर्मों का! धरती उपजाऊ होगी तो फल और अधिक अच्छा आयेगा। वह श्रोतापन्न व्यक्ति जो साधना करते-करते, शील समाधि प्रज्ञा में पुष्ट होते-होते अनार्य से आर्य बन गया। जिसने पहली बार निर्वाण का साक्षात्कार कर लिया, मुक्ति की चार सीढ़ियों में से पहली सीढ़ी तक पहुँच गया, पहला सोपान प्राप्त कर लिया। ऐसा व्यक्ति श्रोतापन्न हो गया। श्रोत में पड़ गया।

दान का लाभ तो होता ही है पर किसको दान दें? तो कहा कि उस समय कोई श्रोतापन्न था ही नहीं पृथ्वी पर। क्योंकि विपश्यना नहीं थी। क्योंकि निर्वाण का साक्षात्कार करने का तरीका लोगों के पास नहीं था। तो जो थे उन्हीं को दान दिया गया। लेकिन उनके मुकाबले एक श्रोतापन्न को केवल एक समय का भोजन दिया जाय तो वह भी उससे अधिक लाभदायक होता है।

ऐसा क्यों होता है इसे समझें। किसी भी प्राणी को भोजन देंगे तो उसे हम एक दिन का जीवन और दे रहे हैं। उस भोजन के बल पर उसकी जीवनधारा कुछ आगे बढ़ेगी। किसको दे रहे हैं? एक कोई हिंसक पशु है, कोई शेर है, चीता है; दूसरी ओर एक गाय है। एक दिन का भोजन हमने दोनों को दिया। लेकिन गाय को दिया हुआ अधिक पुण्यशाली क्यों? सिंह एक दिन अधिक जी करके अन्य प्राणियों को कष्ट ही देगा। गाय एक दिन अधिक जी करके अन्य प्राणियों को लाभ ही देगी। इसलिए इन दोनों के मुकाबले गाय को दिया हुआ भोजन अधिक फलदायी है, अधिक कल्याणकारी है। एक ओर गाय है और उसके मुकाबले एक सामान्य मनुष्य है, उसे भोजन दिया गया तो उस सामान्य मनुष्य को दिया गया भोजन

अधिक कल्याणकारी होगा। क्योंकि मनुष्य है। पशु के मुकाबले उसके पास ऐसी शक्ति है कि वह अंतर्मुखी हो करके, आत्ममुखी हो करके, सत्यमुखी हो करके अपनी गांठें खोलना सीख जायगा, मुक्त हो जायगा। वह काम पशु नहीं कर सकता। वह गाय जीवनभर जी करके भी अपने आपको मुक्त नहीं कर सकती, उसके पास कुदरत ने वह शक्ति नहीं दी। इस मनुष्य को अगर हमने एक दिन और जिला दिया तो कौन जाने, उस एक दिन अधिक जीने में ही उसे शुद्ध धर्म का संपर्क हो जाय, ऐसी विधि मिल जाय जिससे आत्ममुखी होकर अपनी गांठें खोल ले। इन दोनों के मुकाबले उस व्यक्ति को दिया हुआ दान, उस व्यक्ति को दिया हुआ भोजन अधिक कल्याणकारी है।

मनुष्य में भी एक सामान्य व्यक्ति जिसको धर्म का रास्ता नहीं मिला, सारे जीवन दुराचार का ही जीवन जीता है, उसके मुकाबले एक व्यक्ति जो सदाचार का जीवन जी रहा है, धर्म के रास्ते पड़ गया। इन दोनों में से सदाचारी को दिया हुआ भोजन ज्यादा कल्याणकारी है। इसलिए कि उसका एक दिन भी अधिक जीना उसको सन्मार्ग की ओर ले जाने में सहायता करेगा और सचमुच बढ़ते-बढ़ते मुक्त अवस्था तक पहुँच जायेगा। बड़ा लाभ हो जायेगा उसका।

सन्मार्ग के रास्ते पड़ा हुआ, धर्म के रास्ते पड़ा हुआ एक व्यक्ति है, लेकिन अभी तक उसको निर्वाण का साक्षात्कार नहीं हुआ। उसके मुकाबले एक व्यक्ति जिसको निर्वाण का साक्षात्कार हो गया, उसे एक दिन का भोजन देते हैं तो वह ज्यादा पुण्यशाली है। क्योंकि उस व्यक्ति को हमने यदि एक दिन का जीवन दिया तो एक दिन अधिक जी करके वह केवल अपना ही कल्याण नहीं कर रहा बल्कि हर सांस के साथ अब वह जो तरंगें पैदा करता है, हर क्षण जो तरंगें पैदा होती हैं, वे आसपास के सारे वातावरण को धर्म की तरंगों से भरती हैं। वह न जाने कितने लोगों के कल्याण का कारण बन जायगा।

इसीलिए कहा कि इतने लोगों को जो मैंने दान दिया उनके मुकाबले एक श्रोतापन्न को दिया भोजन का दान कहीं अधिक कल्याणकारी होता है, कहीं अधिक पुण्यशाली होता है।

अनेक श्रोतापन्न को भोजन दिया उसके मुकाबले अगर एक सकदागामी को भोजन दे दिया, वह कहीं अधिक कल्याणकारी होगा, कहीं अधिक फलशाली होगा! अनेक सकदागामी को भोजन दिया उसके मुकाबले केवल एक अनागामी को भोजन दे दिया, वह कहीं अधिक कल्याणकारी हो गया! अनेक अनागामी को भोजन दान दिया, उसके मुकाबले एक अरहंत को भोजन दान दे दिया, वह उससे भी अधिक कल्याणकारी हो गया! अनेक अरहंतों को भोजन दिया और एक सम्यक संबुद्ध को भोजन दे दिया, वह कहीं अधिक कल्याणकारी हो गया। किसी सम्यक संबुद्ध को भोजन दे और तपने वाले संघ को भोजन दे तो सम्यक संबुद्ध को दिये हुए भोजन से भी ज्यादा कल्याणकारी हो गया!

और उसके बाद कहा कि कितने ही बड़े तपने वाले संघ को भोजन दे करके, कितना ही बड़ा पुण्य अर्जित क्यों न कर ले, उसके मुकाबले साधना करने वाले के लिए अगर कोई सुविधा बना दी, कोई शून्यागार बना दिया, जिसमें बैठ करके कोई व्यक्ति अपनी मुक्ति का रास्ता खोज सकता हो तो उन सारे पुण्यों से भी अधिक ऊंचा पुण्य है, अधिक कल्याणकारी है।

अब तक जो काम हुए वे निरर्थक हुए ऐसा नहीं कहते, पर

शून्यागार बनाने का जो भी श्रम कर रहे हैं वह अधिक कल्याणकारी है। एक-एक व्यक्ति अलग-थलग रहे। उसका निवास भी अलग हो और उसके ध्यान का जो स्थान हो वह भी अलग हो तो साधक की जो प्रगति होती है वह कई गुना अधिक होती है।

बहुत अच्छी बात कि इस तपोभूमि में शून्यागार बनने का काम शुरू हुआ। इस धरती का सम्मान करते हैं। अपने यहां एक परंपरा है – भूमिपूजन होता है। शुद्ध धरम के रास्ते क्या भूमिपूजन होता है – भूमि का सम्मान इसी तरह किया जाता है कि तपते हैं उस भूमि पर बैठकर। तप करके जो शुद्ध तरंगें पैदा करेंगे, इससे बढ़कर कोई धरती सम्मानित नहीं हो सकती, पूजित नहीं हो सकती। तो इसीलिए यहां तपे, तप करके भूमि का सम्मान किया। अधिक से अधिक धरम की तरंगें इस भूमि पर स्थापित हों, इस वातावरण में स्थापित हों ताकि अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो, यही भूमिपूजन है। यही भूमि का सम्मान है।

जो भी साधक अब तक यहां तपते रहे हैं, अपना मैल उतारते रहे हैं, जिसका थोड़ा भी मैल उतर जाता है मन में मंगलमैत्री जागती ही है कि जैसे मेरा कल्याण हुआ, जैसी सुख-शांति मुझे मिली, थोड़ी-सी ही मिली, ऐसी सुख-शांति अधिक से अधिक लोगों को मिले, अधिक से अधिक लोगों को मिले। अधिक से अधिक लोगों के करम-बंधन टूटें। अधिक से अधिक लोगों को मुक्ति का रास्ता मिले। ऐसा मंगलभाव मन में जागता है कि मैं उसमें कैसे सहायक हो सकूँ! अनेक प्रकार से सहायक हो सकता है – जिसके पास जो शक्ति है, उस शक्ति के बल पर सहायक हो सकता है। शरीर की सेवा करके सहायक हो सकता है। वाणी द्वारा सहायक हो सकता है। किसी के पास धन है, धन द्वारा सहायक हो सकता है। पर उन सबसे बढ़कर एक बहुत बड़ी सहायता होती है, तपकर सहायक होता है।

पुराना साधक इस धरती पर जितना तपेगा उतना ही अनेक लोगों के मंगल का कारण बनेगा। गुरुदेव के जीवनकाल में देखते थे – कि अनेक लोग ऐसे जो निर्वाण अवस्था तक पहुँचे हुए और उस अवस्था तक जो पहुँचता है वह जब जी चाहे, जितने समय के लिए जी चाहे, निर्वाणिक अवस्था की अनुभूति करता है। ऋण से मुक्त होना है तो कैसे हो सकते हो? और लोग अपनी ओर से शरीर-श्रम का दान दे करके, धन का दान दे करके, अन्य प्रकार से सहायता करके, अपने-अपने ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करेंगे। लेकिन इतने अच्छे तापस के लिए तो यही उचित है कि कम से कम सप्ताह में एक बार यहां आ जाया करो और किसी शून्यागार में बैठ करके एक घंटे की निर्वाणिक समाधि लेकर चले जाया करो। बस, हो गया! कितनी बड़ी सेवा हो गयी। सारा का सारा आश्रम उन धरम की तरंगों से इतना आप्लावित हो उठेगा! तो जो भी साधक जिस-जिस अवस्था तक पहुँचा है, जितना भी तपा है उतनी तरंगें पैदा करेगा ही।

शून्यागार बनाकर अनेक लोगों को उसमें तपने की जो सहूलियत दे रहे हैं, यह तो अपने आपमें बहुत पुण्य की बात है ही, पर उससे कहीं बड़े पुण्य की बात यह होगी कि हर एक साधक सप्ताह में एक बार यहां आकर के तपेंगे। यह अपने तप का दान है। अपने तप की तरंगों का दान है। वह इस धरती को खूब अधिक पकायेगा, खूब अधिक तपायेगा। जिससे कि जो भी व्यक्ति आये वह थोड़े ही श्रम से अधिक प्राप्त कर सके। अपने विकारों से युद्ध करने की मेहनत तो हर व्यक्ति को करनी पड़ेगी। लेकिन आसपास का वातावरण अगर धरम की तरंगों से तरंगित है तो मेहनत आसान हो

जायगी। बाहर की तरंगें अगर दूषित हैं तो बाधाये अधिक आयेंगी। भीतर की तरंगों से यानी अपने विकारों से भी लड़ रहा है और बाहर की तरंगें भी ऐसी हैं जो पांव खींचने वाली हैं तो काम नहीं करने देती। उससे बचाव हो जायगा। बहुत बड़ा बल मिलता है, बहुत बड़ी सहायता मिलती है। साधकों को चाहिए कि अपने भीतर मंगल मैत्री जगायें। अपना कल्याण तो है ही। जब आकर तपेंगे तब अपना कल्याण तो है ही। लेकिन उस तपने से और न जाने कितनों का कल्याण होगा। सदियों तक कल्याण होने वाला है। जहां धरम की तरंगें जागने लगीं तो लोग अपने आप खिंचते हुए चले आयेंगे। इस स्थान पर धरम अपने शुद्ध रूप में जितनी सदियों तक रहेगा, उतनी सदियों तक न जाने कितने लोग आयेंगे, तपेंगे, अपना-अपना कल्याण करेंगे।

इस समय जो भी तप रहे हैं, भविष्य में आकर जो भी तपेंगे उन सबका मंगल हो! उन सबका कल्याण हो! उन सबकी स्वस्ति मुक्ति हो, उन सबकी स्वस्ति मुक्ति हो!

कल्याण मित्र,
स.ना.गो.

विश्व विपश्यना पगोडा में १७ जनवरी, २०१० के कृतज्ञता सम्मेलन में भाग लेने वालों से नम्र निवेदन

कृपया अपने आसपास के साधकों पर ध्यान देकर देखें कि क्या आप किसी ऐसे साधक को जानते हैं जो प्रथम दस वर्षों (जुलाई १९६९ से १९७९ अंत तक) में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में विपश्यना का एक भी शिविर ले चुके हों, वे सभी साधक धन्यवाद के पात्र हैं और वे सब सपरिवार “कृतज्ञता सम्मेलन” में आने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

पिछले अंक में अन्य साधकों के भी आने का समाचार भूल से छप गया था, जो कि संभव ही नहीं है। स्थान की कमी के कारण सभी साधकों को नहीं बुला सकते। इसलिए उपरोक्त समयावधि (१९६९ से १९७९) के साधकों के अतिरिक्त सभी आचार्य, वरिष्ठ सहायक आचार्य, सहायक आचार्य, बालशिविर शिक्षक, केंद्रों पर सेवा देने वाले धम्मसेवक तथा ट्रस्टीज और कुछ विशिष्ट लोगों को आमंत्रण भेजा गया है। वे सभी इसमें भाग लेने के लिए सपरिवार आमंत्रित हैं। कृपया ध्यान दें कि जो आमंत्रित किये गये हैं और पधार रहे हैं, उन सब का नाम हमारे कार्यालय में पंजीकरण कराना अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना हमें तथा आप, दोनों को कठिनाई हो सकती है। इसलिए कृपया बिना पंजीकरण के बिल्कुल न आयें। कृपया निम्न संपर्क पते पर बुकिंग कराकर ही आयें, ताकि यथासमय आप सब के भोजन आदि का समुचित प्रबंध किया जा सके।

संपर्क: कु. भावना गोगरी या कु. नमिता बजाज, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जिला- नाशिक, (महाराष्ट्र) Email: globalpagoda17jan@gmail.com; फोन- मो. +९१-९९६७८७१६४४, +९८१९६१५४२६, ०२५५३-२४४०८६, २४४०७६, (प्रातः १० से सायं ५)

मंगल मृत्यु

गांधीधाम, कच्छ के विपश्यना के आचार्य श्री प्रताप ठक्कर का २ नवंबर को हृदयगत रुक जाने से देहांत हुआ। उनकी पत्नी श्रीमती शांताबेन भी आचार्या हैं। दोनों ने मिल कर अनेक शिविरों का संचालन किया और सैंकड़ों का कल्याण किया। इस पुण्यफल से उनका मंगल ही होगा। उन्हें शांति लाभ प्राप्त हो।

धम्म पफुल्ल, बैंगलोर का निर्माणकार्य

यहां १०० साधकों के लिए धर्मकक्ष, ३० पुरुष-निवास, २० महिला-निवास तथा इन सब के योग्य सभी प्राथमिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। अब इसके विस्तार में २५ महिला-निवास (कुल लागत ६० लाख रुपये) पूरा होने पर पुरुषों के निवास बनेंगे और तीसरे चरण में पगोडा निर्माण का काम हाथ में लिया जायगा।

जो भी साधक-साधिकाएं चाहें इन निर्माणकार्यों में भागीदार बन सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क – विपस्सना मेडीटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर, धम्म पफुल्ल, अदूर,

ऑफ टुमकुर रोड, दासनपुरा, होबली, बेंगलोर- ५६२१२३. फोन- २३७१२३७७, ०८०-२५४५२६३९, ०९८४५१-८८२६२, Email: info@paphulla.dhamma.org

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक दिवसीय विशेष शिविर

आगामी २० दिसंबर, रविवार को विश्व विपश्यना पगोडा में विशेष एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया है, जिसकी मैत्री और दैनिक साधना का मार्गदर्शन पूज्य गुरुदेव स्वयं देंगे। अधिक से अधिक साधक इसका लाभ उठा सकते हैं। कृपया अपनी बुकिंग कराकर ही आएं, बिना बुकिंग बिल्कुल नहीं।

विपश्यना विशोधन विन्यास के दान-दाताओं को १२५ प्रतिशत की आयकर की छूट

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की ओर से आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ३५(१)(३) के अंतर्गत दानदाता को दान की रकम पर १२५ प्रतिशत की छूट मिलती है जो कि विपश्यना विशोधन विन्यास को अब स्थायी रूप से प्राप्त हो गयी है। पहले यह छूट निश्चित समयावधि तक के लिए ही प्राप्त हुआ करती थी। यथा अधिनियम सं. ७१/२००९ दि. २५.०९.२००९ (फा.सं. २०३-१३-२००८ आ.क.वि.-२) के अंतर्गत कर निर्धारण वर्ष २००६-२००७ से आगे अगली सूचना मिलने तक यह छूट प्राप्त है। इस प्रकार विपश्यना विशोधन विन्यास के सभी दानदाता वित्तीय वर्ष १९९१-९२ से अब तक और आगे भी, अपनी दी गई दान-राशि पर तदर्थ आवेदन कर सकते हैं।

आवश्यकता है

धम्मपाल, भोपाल के लिए सवैतनिक केंद्र-व्यवस्थापक तथा शिविर-व्यवस्थापक की आवश्यकता है। संपर्क - धम्मपाल विपश्यना केंद्र के पते पर.

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

- श्री गौतम गोस्वामी, कच्छ
- श्रीमती आशा कुमारी, नई दिल्ली
- श्री टी. प्रीतमदास, हैदराबाद
- श्री ए. शिवराज, बेंगलोर
- 5-6. Mr. Ian & Mrs. Lee Landy, Australia

बालशिविर शिक्षक

- श्री के. मंजुनाथ, बेंगलोर

- श्री जयंथ शेटी, उडूपी
- Ms. Shannon Ellis, Australia
- Mr. Balu Gopalan, Australia
- Mr. Jean-Baptiste Labbe, Australia
- Mrs. Joanna Watni, Australia
- Ms. Carolina Ann Johns, South Africa

दोहे धर्म के

अन्न वस्त्र, वाहन भुवन, स्वर्ण रत्न का दान।
सब दानों से उच्च है, श्रेष्ठ धर्म का दान॥
अन्न वस्त्र गृह दान दें, औषधि विद्या दान।
पर इन सब से श्रेष्ठ है, शुद्ध धर्म का दान॥
दान वही जो चित्त को, निर्मल देय बनाय।
दान नहीं जो चित्त में, कड़वाहट भर लाय॥
शांत चित्त अंतर्मुखी, बैठे शून्यागार।
देखत देखत वेदना, दिखे परम सुख सार॥
जब जागे संवेदना, प्रज्ञारत ही होय।
विपश्यना अभ्यास से, तृष्णारत ना होय॥
अपने अंतर्जगत को, देख सके तो देख।
देखत देखत स्वयं ही, जागे तथ्य अनेक॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सांत चित्त अंतरमुखी, बैट्यो सूच्यागार।
देखत देखत वेदना, दिखयो सुख रो सार॥
सील पकै चित थिर हुवै, प्रग्या जगती जाय।
इसै धरम रै दान स्यूं, मुक्ति द्वार खुल ज्याय॥
धरम दान सब दान स्यूं, सिरै-मोर कहलाय।
देवणियो अर लेणियो, दोन्यूं ही तर ज्याय॥
साधक रै अभ्यास मँह, समुद सहायक होय।
भोजन कुटिया दान भी, धरम दान ही होय॥
वाहन देकर सुख दियो, घर देकर विसराम।
धरम दियो तो स्रेष्ठतम, दियो मुक्ति रो धाम॥
समझ धरम रै मरम नै, देवै सो ही दान।
दान दियां मन प्रिदु हुवै, प्रिदु मन सुख री खाण॥

एक साधक

की मंगल कामनाओं सहित

‘विपश्यना विशोधन विन्यास’ के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. बुद्धवर्ष 2553, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 2 दिसंबर, 2009

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US \$ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US \$ 100. ‘विपश्यना’ रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011

Licensed to post without Prepayment of postage -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Iगतपुरी-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org (changed)